

सांवण की रितु आई रे ज़रा बाजे बांसुरी।

झूलत कुंवर कन्हारै रे ज़रा बाजे बांसुरी॥

सन्त भी झूलनि भक्त भी झूलनि स्नेह भक्ति सरसाई रे॥

शंकरु भी झूले गणेशु भी झूले झूले पारवती माई रे॥

रमा रमेश रस से झूलें चार भुजनि लपटाई रे॥

बृह्मा भी झूले बृह्माणी भी झूले झूले शारदा बाई रे॥

शची इन्द्र मिलि प्रेम से झूलें झूलें बहिन भोजाई रे॥

रिषी मुनी झूलें जोगी जटा झूलें बाल बच्चों को झुलाई रे॥

सागर भी झूलें नदियां भी झूलें झूलत वाहड़ वाही रे॥

जलचर झूलनि थलचर झूलनि नभचर नाच दिखाई रे॥

आकाश झूले पाताल भी झूले झूले मैदनी माई रे॥

कथा भी झूले शास्त्र भी झूलें झूलेमि संगति सभाई रे॥

साई भी झूलें अमड़ि भी झूलें झूलें श्री सीअ रघुराई रे॥

उड़िया बाबा झूलें अखण्डानन्द झूलें झूलें हरी बाबा  
हर्षाई रे॥

बृज भूमि झूले यमुना जी झूले झूले युगल सदाई रे॥